UP की आधी शुगर मिलों पर बढ़ा खतरा

गन्ना किसानों पर पेमेंट का प्रेशर बनने से अगले साल कई मिलों के ऑपरेशन पर होगा असर

उत्तर प्रदेश में गन्ने का मौजूदा मूल्य 280 रुपए क्विंटल है। अखिलेश सरकार ने अगले साल चुनावो को देखते हुए इसमें बढ़ोतरी की थी

[श्रेया जय *नई दिल्ली*]

उत्तर प्रदेश में शुगर प्रोडक्शन सबसे बड़ी एग्रीकल्चर बेस्ड इंडस्ट्री है और नए शुगर सीजन के शुरुआत में ही यह इंडस्ट्री बंदी के कगार पर है। शुगर इंडस्ट्री ऑफिशियल्स ने चेताया है कि अगर राज्य सरकार गन्ना किसानों के पेमेंट्स को लेकर लगातार दबाव बनाती रही, तो अगले साल राज्य में आधे से ज्यादा चीनी मिलें या तो ऑपरेशंस बंद कर देंगी या दूसरे राज्यों में चली जाएंगी। राज्य में गन्ने की डिमांड आधे से ज्यादा घट गई है। साथ ही शुगर प्रोडक्शन भी रिकॉर्ड लो लेवल पर चला जाएगा।

इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन के डायरेक्टर जनरल अबिनाश वर्मा का कहना है, 'मौजूदा कीमत पर जल्द ही यूपी में गन्ने का कोई खरीदार नहीं होगा। किसान या तो लगभग आधे दाम पर गुड़ मैन्युफैक्चरर्स को गन्ना बेचने को मजबूर होंगे या उनकी फसल बर्बाद होगी।'

उत्तर प्रदेश में गन्ने का मौजूदा मूल्य 280 रुपए क्विंटल है। अखिलेश सरकार ने अगले साल होने वाले आगामी चुनावों को देखते हुए इसे 240 रुपए से बढ़ाकर 280 रुपए प्रति क्विंटल किया है। राज्य में चीनी का दाम 29 रुपए प्रति किलो है। उत्तर प्रदेश की चीनी मिलों ने पिछले शुगर सीजन में 8.15 करोड़ टन गन्ने की पेराई की और इससे 74 लाख टन चीनी बनाई।

मौजूदा कीमत पर जल्द ही यूपी में गन्ने का कोई खरीदार नहीं होगा। किसान या तो लगभग आधे दाम पर गुड़ मैन्युफैक्चरर्स को गन्ना बेचने को मजबूर होंगे या उनकी फसल बर्बाद होगी

अबिनाश वर्मा, डायरेक्टर जनरल, इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन

वहीं, इस शुगर सीजन में गन्ने के पेराई में ज्यादातर चीनी मिलों में पहले ही देरी हो चुकी है। आमतौर पर मिलों में गन्ने की पेराई अक्टूबर से शुरू हो जाती है। वर्मा का कहना है, 'मौजूदा हालात को देखते हुए हम कह सकते हैं कि अगले साल राज्य में चीनी का प्रोडक्शन घटकर 50-55 लाख टन के लेवल पर रह सकता है। हम राज्य सरकार को गन्ना भुगतान के रूप में हर साल 6,000 करोड़ रुपए दे रहे हैं। ऐसे में अगर आधी भी चीनी मिलों ने काम करना बंद कर दिया, तो शुगर इंडस्ट्री से मिलने वाले रेवेन्यू भी घटकर 3,000 करोड़ रुपए रह जाएगा।'

राज्य की चीनी मिलें इस समय दोहरे संकट से गुजर रही हैं। इन्हें गन्ना किसानों के कड़े विरोध का सामना करना पड़ रहा है और स्थानीय अधिकारी जान पर जोखिम का हवाला देते हुए वहां जाने से बच रहे हैं। चीनी मिलों पर किसानों के भुगतान को लेकर राजनीतिक दबाव है।

हाल में बिजनौर जिले में आठ चीनी मिलों के सीनियर ऑफिसर्स को आधी रात बिना किसी लिखित कानूनी चार्ज के हिरासत में ले लिया गया था। इस इलाके में देश की सबसे बड़ी शुगर मिल बजाज हिंदुस्तान लिमिटेड की फैक्ट्रियां हैं।

साथ ही यहां धामपुर शुगर, वेव शुगर्स, द्वारिकेश शुगर और बिड़ला शुगर की फैक्ट्रियां हैं। इंडस्ट्री सूत्रों का कहना है कि हालिया घटनाक्रम के बीच इन कंपनियों के 23 अधिकारियों ने इस्तीफा दे दिया है। दिवाली के मौके पर गन्ना किसानों का पेमेंट करने के लिए देश की शुगर मिलों लागत से कम दाम पर चीनी की बिक्री कर रही हैं।

Economic Times (Hindi)

30/10/13